Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-IV ISSUE-II FEB. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

सरकारी तंत्र का आईना : भोलाराम का जीव

डॉ सत्यनारायण

''हिंदी व्यंग्य के प्रेरणा हरिशंकर परसाई (1922–1995) के लिए लेखन सदा साधना की तरह रहा। उनकी पहली रचना 'पैसे का खेल' सन 1947 में प्रकाशित हुई। तब से वे निरंतर रचनाशील रहे, समय समाज की विकृतियों को सदा गम्भीरता से उकेरते रहे।''

श्री हरिशंकर परसाई ने जब 1947 में लिखना शुरू किया तब से आज तक उनके व्यंग्य बड़ी निष्ठा से पढ़े जाते है। बहुत सारे व्यंग्य लेखक हिंदी साहित्य में हुए है लेकिन परिसाई जी की पहचान अपनी है। परसाई जी ने विभिन्न विधाओं में अपना लेखन कार्य किया लेकिन व्यंग्य विधा हरिशंकर परसाइ की पर्याय मानी जाती है। इन्होंने कुल मिलाकर 40 पुस्तकों की रचना की है। फिर भी इनका व्यंग्य स्वर ही प्रमुख रहा है। विभिन्न रचनाएं चाहे किसी विधा में रही हो लेकिन व्यंग्यपरकता से परिसाई जी नहीं चुके। ''भोला राम का जीव' लेखक ऐसी ही रचना है। जिसमें लेखक ने सरकारी तंत्र की पोल खोली है। लेखक ने उक्त रचना में चित्रगुप्त के माध्यम से अपना कथ्य कहा है। कथा दर्शन में यमराज दरबार को देखते हैं। ''सामने बैठे चित्रगुप्त बार–बार चश्मा पीछ, बार–बार य थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर पर रजिस्टर देख रहे थे। गलती पकड़ में नहीं आ रही थी। आखिर कार खोजकर उन्होंने रजिस्टर को इतनी जोर से बंध किया कि मक्खी चपेट में आ गई। उसे निकालते हुए बोले, 'महाराज सब ठीक है। भोला राम के जीव ने पांच दिन पहले देह त्यागी है और यमदूत के साथ इसी लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर अभी तक पहुंचा नहीं।''[2] यह व्यंग्य सरकारी फाईल की तुलना यमदूत से कर रहा है। जब चला तो चला या ना चला तो पड़ा रहा धूल में। कारण यह था कि जैसे ही यमदूत भोला राम का जीव लेकर चला, भोलाराम का जीव चमका देकर रफूचक्कर हो गया। और समस्या तब शुरू हुई जब बहुत प्रत्यन के बाद मिला नहीं। अपनी योग्यता पर, आत्मविश्वास से परिपूर्ण वह बोला, ''महाराज मेरी सावधानी में बिल्कुल कसर नही थी। मेरे इन अभ्यस्त हाथों से, अच्छे–अच्छे वकील भी नहीं छूट सके। पर इस बार तो कोई इंद्रजाल ही हो गया।'' यह सब कुछ तंत्र के तहत हो रहा था। तंत्र में धर्मराज बड़े थे। बोस थे। उसने चित्र की ओर देखकर कहा,'' तुम्हारी नारद जी। यह नारद धर्मराज के कार्यालय में ही नहीं होते हर कार्यालय में देखने को मिल जाते हैं। इनका काम! इनका काम सब जानते हैं! चुगली चाटी, शिकायत और दूसरे की कमजोरी ढूढ़ना। नारद आज भली बात कहने नहीं आए। धर्मराज को यह बताने आए है जानते हैं कि भोला राम का जीव कहा है और कैसे उसे पकड़ा जा सकता है। उन्होंने पता लगा लिया था,'' पांच साल हो गए, पैंशन पर बैठे, पर पैंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस पंद्रह दिन में दरखास्त देते थे, पर वहांसे या तो जवाब आता ही नहीं था और आता तो, यही कि तुम्हारी पैंशन पर विचार हो रहा है।'' अब यह बात धर्मराज को भला कैसे मालूम होती कि दफ्तरों में क्या चलता हा? आखिर बोस हैं। और बोस भी उस विभाग के जहां आदमी मरकर पहुंचता है। जीवित होता तो कुछ लालच भी जगता। इन बातों को तो नारद जैसे नाटाकर्त्ता, जिनको या तो किसी से ईष्यों होती है, या उनकी आदत होती है या फिर बोस की झूठी वाह–वाही की भूख होती है, जानते है। कार्यालय के नारद सब जानते हैं, सबके बारे में सब जानते हैं। लेकिन अबकी बार बुरे फंसे नारद जी, ''स्त्री ने गुर्राकर नारद की ओर देखा। बोली, ''बको मत महाराज, तुम साधु हो, उच्चके नहीं हो। जिंदगी भर उन्होंने दूसरी स्त्री को आंख उठाकर नहीं देखा।''[6]

इतना ही नहीं अब नारद जी भोलाराम की स्त्री पर दया करके सरकारी दफ्तर पहुंच गए। यहां की स्थिति तो देखने लायक थी। बाबू जी से नारद ने जब भोलाराम की फाइलों के बारे में पूछा तो उसने बताया कि भोलाराम ने फाइलों पर वजन नहीं रखा इसलिए उड गई। यहां पर वजन से अभिप्राय रिश्वत था। नारद ने भोला बन कहा कि पेपर वेट रखे हैं, तो फाईल कैसे उड गई। बाबू हँस नारद की अज्ञानता पर। परन्तु नारद तो सब जानता था। केवल अनजान बरा रहा। बाबू को नारद के भोले पन पर हंसी आ गई। और उसने कहा, '' आप साधु हैं, आपके दुनियादारी समझ में नहीं आती दरखास्त पेपर वेट से नहीं दबती। खैर आप उस कतरे में बैठे बाबू से मिलिए।''7 यहां दफ्तर में नारद की होती है परेड/ एक कमरे से दूसरे कमरे एक बाबू से दूसरे बाबू। लगभग पच्चीस तीस बाबुओं के पास चक्कर लगाने पर नारद जी के छक्के छुट गए। चपरासी को उनके साधुपने पर दया और समझाने के अंदाज में उसे दफ्तर में क्यो आ गई वाला सवाल किया बिना उत्तर सुने उसने नारद को बड़े साहब के पास भेज दिया। नारद जी को चपरासी की बात कुछ–कुछ समझ आ गई परन्तु सब कुछ समझ में आ वह था सरकारी तंत्र, सरकारी कार्यालय। नारद जी जब बड़े साहब के कमरे के पास पहुंचे तो नजारा कमाल का था। चपरासी हंस रहा था, या तो सो गया था, सा सोने की अटकले लगा रहा था। नारद जी का अंदर जाना एक घटना थी और यह अचानक नहीं थी, परन्तु साहब का, बड़े साहब को यह उचित न लगा और गले नहीं उतरा, फट से बोल पड़े, '' इसे मदिर–मंदिर समझ लिया है क्या? धड़ाधड़ चले आए। चिट क्यों नहीं भेजी।'' नारद को बिना सुने ही बोले, काम बताओ। नारद ने भोला राम के पैंशन की बात कही। सहाब इस बार जरा नरम लहजे में बोले, '' आप है वैरागी। दफ्तरों के रीति रिवाज नहीं जानते। असल में भोला राम ने गलती की। गई यह भी एक मंदिर है। यहां भी दान–पुण्य करना पड़ता है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरखास्ते उड़ रही है, उन पर वचन दखिए। ''[8] साहब फिर बोले '' भई, सरकारी पैसे का मामला है, पैंशन का केस बीसों दफ्तरों में जाता। देर लग जाती है। बीसों बार बार एक ही बात को बीस जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है, हा जल्दी भी हो सकता है मगर।''[9] साहब रूके'' वजन चाहिए। आप समझे नहीं यह आपकी सुंदर वीणा है। इसक वजन भी भोला राम की दरखास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूंगा। साधु संतों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते है।''[10]

अब नारद जी की घिग्घी बंद गई। पर क्या करते यमराज की वाह–वाही जो लेनी थी। जरा घबराए तो सही पर ख्याल आया कि यमराज की नजरों नम्बर जो बनाने थे, ऊँचा उठना था। सो वीणा दे देनी चाहिए थी। अतः साहब की उदर पूर्ति हो गई और भोलाराम फाईल पर वजन पड़ गया। अब फाईल चलनी जरूरी थी, इसलिए सहाब ने बड़े बाबू से हुक्म द्वारा फाईल मंगवा ली। नतीजन बाबू सौ डेढ़ सौ फाईलों के साथ साहब के केबिन में दाखिल हुआ। इसमें फाईलों में पैशन जरूरी कागजात भी थे। सहाब ने नारद से नाम पूछा और नारद को लगा कि साहब ऊँचा सुनाते हैं क्योंकि वे पहले बता चुके, इसके विपरीत भोला राम की फाईल साहब के सामने थी। वे केवल कन्फर्म करने के लिए नाम पूछ रहे थे। नारद जोर से बोले ''भोला राम''। [12] सहसा फाईलों में अटका वह भोला राम का जीव बोला ''कौन पुकार रहा मुझे? पोस्टमैन है? क्या मेरी पैंशन का आर्डर आ गया? नारद की समस्या हल हो गई। उसे लगा कि यह भोला राम का जीव है और कहा, '' मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग में तुम्हारा इंतजार हो रहा है।''[14] आज में ना थी और फाईलों के अटकने दर्द भी। इस प्रकार लेखक प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम वर्तमान सरकारी कार्यालयी तंत्र के बारे बताया है। लेखक ने यह बात स्पष्ट की है कि किस प्रकार हमारे सरकार के कार्यालय में कार्य हो रहे हैं। यह एक कार्यालय की नहीं सभी सरकारी कार्यालयों कि संस्कृति में कार्य हो रहे हैं। यह एक कार्यालय की नहीं सभी सरकारी कार्यालयों कि संस्कृति है कि बिना वजन के कार्यालय सरकते ही नहीं, फाईलें उड़ जाती है और गुम

भी हो जाती है। यहीं भोला राम के साथ हुआ। मरकर भी उसकी फाईल नारद ने अपनी वीणा देकर सरकवानी पड़ी। साथ ही दफ्तरों में नारद संस्कृति का भी बखान किया कि लोग बिना किसी लेने–देने के, बिना किसी काम के लोगों की गुप्त सूचनाएँ बटोरने में लगे हुए है। यह बोस के सामने भला बनने, अपने को अच्छा साबि करने, अपने नम्बर बनाने में लगे रहते हैं।

प्रस्तुत व्यंग्य में लेखक ने अंत भेंदी दृष्टि के साथ, रिश्वत वादिता के कार्यालयों के ऊपर करारा निशाना किया है। '' उनका व्यंग्य परिवर्तन की चेतना पैदा करता है, कोरे हास्य से अलग यह व्यंग्य आदर्श के पक्ष में अपनी उपस्थित दर्ज कराता है।''[14]

परसाई जी ने अपना अधिकतर लेखन समाचार पत्रों में 'कालम' के माध्यम से लिखा है। इसलिए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उनकी भाषा प्रसंगानुकूल होते हुए विभिन्न रूपों में स्तरीय है। प्रसंग बदलते ही उनकी भाषा में परिवर्तन आ जाता है। और यह परिवर्तन एक निश्चित उदेश्य की पूर्ति करता है। उनकी यह कला चकित कर देने वाली है।

संदर्भ

i. हरिशंकर परसाई (संकलित रचनाएँ) श्याम कश्फ पिछला पृष्ठ
ii. ..... वही पृष्ठ 21
iii. ..... वही पृष्ठ 21
iv. ..... वही पृष्ठ 21
v. ..... वही पृष्ठ 21
vi. ..... वही पृष्ठ 21
vii. ..... वही पृष्ठ 21
viii. ..... वही पृष्ठ 21
ix. ..... वही पृष्ठ 21
x. ..... वही पृष्ठ 21
xi. ..... वही पृष्ठ 21
xii. ..... वही पृष्ठ 22
xiii. ..... वही पृष्ठ 22
xiv. ..... वही पृष्ठ 22
xv. क्षितिज एन सी आर टी. पृष्ठ 58